विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

मुजफ्फरपुर, 31 अक्टूबर 2011

लीची पर अब टूट रहा 'सेमीलूपर' का कहर

अरुण कुमार झा, मुजफ्फरपुर

लीची पर एक नया खतरा मंडराने लगा है। 'सेमीलूपर' नामक कीट ने पेड़ पर आ रहे नए पत्तों को चट करना शुरू कर दिया है, जिससे मंजरों को भी व्यापक नुकसान होने की आशंका है। लीची अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों का कहना है कि ये विशिष्ट तरह के हानिकारक जंगली कीट हैं जो बहु भक्षी हैं। इसके पूर्व इस कीट ने 2009 में लीची को काफी नुकसान पहुंचाया था। इस बार मुजफ्फरपुर के अलावा मोतिहारी व अन्य जगहों पर भी बड़े पैमाने इसका प्रकोप सामने आया है। वैज्ञानिक इसके बचाव का उपाय ढूंढने के साथ-साथ विशेष अध्ययन में भी जुट गए हैं। सेमीलूपर कीट लीची के पेड़ों ■ शेष पृष्ठ 15 पर

लीची के पत्ते पर लगा कीट। जागरण

लीची पर अब टूट रहा 'सेमीलूपर' का कहर

पर आई नई कोपलों व पत्तियों को देखते ही तेजी से पहुंचकर उन्हें खा लेता है। कोपलों के खत्म हो जाने से इस वर्ष लीची में मंजर कैसे आएंगे यह चिंता का विषय बन गया है। वैज्ञानिक बताते हैं कि जलवायु परिवर्तन के कारण यह समस्या सामने आई है। **किस प्रजाति के हैं ये कीट :** राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र के प्लांट पैथोलॉजी वैज्ञानिक डा. विनोद कुमार ने अपने अध्ययन के आधार पर इसे नियोगेलिया सुनिया (लेपिडोपेट्रा : नॉकटयूडे) ओएनोस्पीलैस्प (लूपर फेमली जीयोमेट्रीड्ये) प्रजाति का हानिकारक कीट बताया है। इसका लार्वा 1.7 से 2.2 सेमी तक लंबा व 2 मिमी चौड़ा होता है जो धुंधला, भूरा होने के साथ-साथ इसके शरीर पर काले धब्बे होते हैं। प्यूपा लगभग 0-8.09 सेमी एवं वयस्क 2.1 से 2. 3 सेमी का होता है। इसके पंख फैले होते हैं। यह अपना पूरा जीवनचक्र मात्र 15 दिनों में पूरा करता है। इसका लार्वा पत्तियों को तुरंत चट करने वाला होता है। डा. कुमार के अनुसार इन कीटों के संबंध में विशेष अध्ययन जारी है। **कैसे करें बचाव :** बागों के उचित प्रबंधन से लीची के पेड़ों को इसके कहर से बचाया जा सकता है। कृषि वैज्ञानिक डा. विनोद कुमार कहते हैं कि लीची उत्पादक कीटनाशी क्यूनोफॉस दो मिली अथवा क्लोरीपायरीफॉस 1.5 मिली या डेसिस एक मिली का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डा. विशाल नाथ कहते हैं कि 'रबी की खेती में मशगूल होने के कारण किसान इन दिनों लीची के बागों को उपेक्षित छोड़ देते हैं। इससे इनमें कीट-व्याधियों का प्रकोप बढ़ जाता है। इस साल सेमीलूपर का प्रकोप बड़े पैमाने पर देखने को मिल रहा है। वैसे किसान अगर लीची अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिकों के सुझाव को अमल में लाएं तो बेहतर परिणाम आ सकते हैं। वैसे केन्द्र ने किसानों के बीच जागरुकता अभियान भी शुरू कर दिया है।'